आपातकाल में सृजन फुलवारी

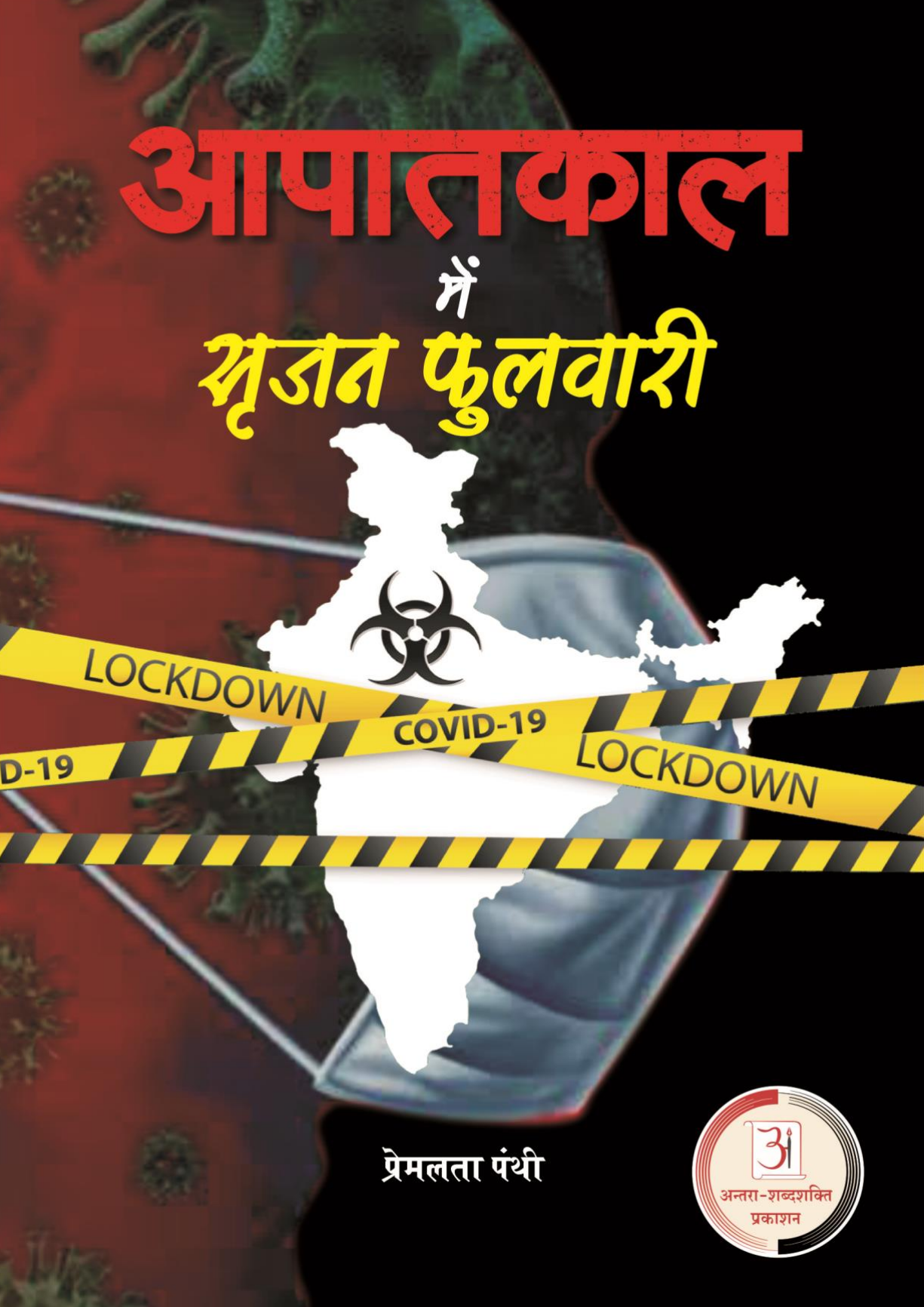

प्रेमलता पंथी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रेमलता पंथी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-149-7
संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, प्रेमलता पंथी
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY PREMLATA PANTHI
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मैं नदी हूँ	6
2.	वक़्त	7
3.	उर्मिला	8
4.	एहसास	9
5.	बन्धन	10
6.	किसान की व्यथा	11
7.	दिल उनके नाम	12
8.	भागकर जाओगे कहाँ	13
9.	स्वयं से स्वयं की पहचान करा	14
10.	ओ! सुहाना बचपन	15
11.	समझदारी	16
12.	माँ वसुधा	17
13.	कोरोना के साथी	18
14.	कोरोना का कहर	19
15.	नारी	20
16.	इन दिनों	21

मैं नदी हूँ

नदी हूँ मैं,मैं मीठी हूँ,
मुझे खारा नहीं होना।
मैं,चंचल हूँ,मैं,निर्मल हूँ,
मुझे गारा नहीं होना।।

वफ़ा करना सिखाती हूँ,
मैं सागर से भी गहरी हूँ।
समंदर की कई नदियाँ,
मुझे समंदर में फ़ना होना।।

मैं दुःख में मुस्कुराती हूँ,
मैं हरदम चलती जाती हूँ।
नहीं आता मुझे अपनी,
मंजिल से जुदा होना।

किनारों में,ही बहती हूँ,
मैं मर्यादा में रहती हूँ।
मैं बस रुक्मण तुम्हारी हूँ,
मुझे राधा नहीं होना।।

वक़्त

याद आता नहीं मगर,
वो जहन में रहता है।
सिमट गया है मुझमें,
और वो मुझसे दूर रहता है।

दिल से सीखा है मैंने,
सुख,दुःख में चलते रहना।
एक दिल ही तो है जो,
दर्द में भी जलता रहता है।

सावन की रिमझिम हो,
या पतझड़ का सूनापन,
ऐसा ही तो ये जीवन है,
मौसम सा बदलता रहता है।

सदा साथ देती नहीं सांसें,
रुक जाती हैं धड़कनें भी,
एक दिन हर दिल की,
और वक़्त चलता रहता है।

उर्मिला

उर्मिला को लिख पाना,
इतना आसान कहाँ है।
वो जीवित है, रिश्तों में,
लेकिन उसमें जान कहाँ है।।

दशा जैसे जल बिन मीन,
झुलसे शरीर में प्राण कहाँ है।
दग्ध करती चन्द्र की प्रभा,
शीतल वयार से आराम कहाँ है।।

त्याग तपस्या की वो मूरत,
स्वयं का उसे भान कहाँ है।।
सीता सम त्याग, उर्मिला का,
लेकिन जग में पहचान कहाँ है।।

धर्म-धुरि पर हुई न्यौछावर,
चन्द्र की चाह का मान कहाँ है।
सास ससुर की सेवा में तत्पर,
अब उसे खुद का ध्यान कहाँ है।।

कठिन होता है पिया बिन कर्तव्य निभाना,
तन यहाँ जान वहाँ है।
त्याग जिसे देख द्रवित हो जाये,
उर्मिला सी जग में नार कहाँ है।।

एहसास

तुम्हारी यादों का मीठा एहसास।
अभी भी है,हमारे आस-पास।।

मन मरुस्थल में, अमृत बरसात।
बढ़ती ही जाती है, मीठी प्यास।।

मन को मधुर मिलन की आस।
आनन्दित करते चटके पलाश।

पूनम चाँदनी रात, धवल प्रकाश।
हर पल लगता जैसे हो मधुमास।।

यादों का सुनहरा सफर, उजास।
तुम धड़कन, धड़कन स्वांस, स्वांस।।

बन्धन

पिंजरे में बैठा,तू क्या,
सोचे ओ पंछी नादान।
पंख बाँधकर प्रेम जताते
धरती के निष्ठुर इंसान।

नहीं जानते,सब कुछ देखे,
ऊपर बैठा वो भगवान।
करनी का फल ये भी भोगेंगे,
जो तेरे दुःख से हैं अंजान।

समय विलक्षण आयेगा,
नभ में तू फिर भरे उड़ान।
तुझे मिलेगी आजादी।
घर में बंध जायेगा इंसान।

किसान की व्यथा

पकने को तैयार खड़ी है,
देखो फसल हमारी।
कारे बदरा बैरी हो गये,
जाये जान हमारी।।

सावन बरसो,भादों बरसो,
लगते हो सुखकारी।
फागुन की वर्षा से हमको,
लगता है डर भारी।।

सींच पसीना फसल उगाई, की रात,
रात भर रखवारी।
फल मिलने की बारी आयी तो,
क्यों तुमने बात बिगारी।।

कर्जा लेकर करी थी बोनी,
फैली है बहुत उधारी।
फसल बेंचकर कर्ज चुकाते,
ले देते प्रिय तुमको सारी।।

सुख दुःख हैं संसार के गहने,
जाने है ये दुनियाँ सारी।
चिंता तजकर भजन करो,
दुःख हर लेंगे गिरधारी।।

दिल उनके नाम

दिल उनके नाम "होने दो यार",
दर्द हमारे नाम "होने दो यार"।

बातें लगतीं उनकी, तुमको मीठी,
ज़हर हमारा जाम "होने दो यार"।

कोरे कागज के जैसा, मन मेरा,
टुकड़े कर,पैग़ाम "होने दो यार"।

सच्चाई की राह, चुनी थी, हमने,
जो भी हो, अंजाम "होने दो यार"।

प्रेम,प्रीत की रीत हम, ना जानें,
वफ़ा हमारा काम "होने दो यार"।

सफ़र सुहाना रहा "सहर" का,
खुशनुमा ये शाम "होने दो यार"।

नहीं जरूरी मंजिल तक पहुंचें,
रस्ता मत बदनाम "होने दो यार"।

भटको मत तुम, दर बदर, "लता"
खुदका एक मुकाम "होने दो यार"।

भागकर जाओगे कहाँ

मत भागो तुम,
अपनी जिम्मेदारी से।
निज दायित्व निभाओ,
पूरी वफ़ादारी से।।

रहो कर्मठ, जीना सीखो,
अपनी खुद्दारी से।
मुश्किलों से क्या घबराना,
जीत, जाएँगे लाचारी से।।

भागकर जाओगे कहाँ,
जूझो समय की सवारी से।
मंजिल मिलना तय है बस,
चलो समझदारी से।।

स्वयं से स्वयं की पहचान कराओ

भटक रहा मन यहाँ-वहाँ।
खोज रहा है जाने किसको।।

मुझसे मेरी पहचान नहीं है।
और जानूँ मैं सब जग को।।

स्वप्न सरीखा है जग सारा।
क्यों दुःखी करूँ मैं मन को।।

हरि से हिय का हो गठबंधन।
जान जाऊँ अगर मैं, मैं को।।

मन की पीड़ा सब मिट जाये।
यदि पहचानूँ स्वयं,स्वयं को।।

ओ! सुहाना बचपन

बीत गये वो पल, मधुर सुहाने बचपन के।
वो रिमझिम बरसातें, वो झूले सावन के।।

सिमटा है बचपन, घर की चार दिवारी में।
टीवी, मोबाइल, किताबों की अलमारी में।

बिसर गए वो आँगन, दादा, दादी, नानी के।
घण्टों उनसे सुनना, किस्से राजा रानी के।

अब न लौटेगा, वो बचपन सुघर सलौना।
वो घी,शक्कर रोटी, दही माखन का लौना

समझदारी

प्रेम भाव से घर में रहना समझदारी है।
करुण वेदना व्यथित मन की क्यारी है।।

कोरोना का कहर अभी जारी है।
घुल रहा ज़हर हवाओं में भारी है।।

घर से बाहर बिल्कुल नहीं जाना।
यही सभी की जिम्मेदारी है।।

काले बादल छँट ही जाएँगे।
मिलकर हौसला रखने की बारी है।

माँ वसुधा

आदमी कितना मजबूर है।
फिर भी कितना मग़रूर है।।
दुगुना करके देती है सृष्टि।
ये तो कुदरत का दस्तूर है।।

घोल कर ज़हर हवाओं में।
पूछता है किसका कसूर है।।
जीवन दायनी है ये प्रकृति।
धरा की गोद में बहुत नूर है।।

जायज है इसका रूठ जाना।
दर्द से दिल दरकता जरूर है।।
बेफ़िक्र है इंसां,प्रकृति के दर्द से।
ममता मयी वसुधा तो बेकसूर है।।

कोरोना के साथी

माफ़ी मांगों, पकड़ो कान।
बाहर की मत भरो उड़ान।।

समझदार बन रहो घरों में।
बाहर घूम रहा भारी शैतान।।

कोरोना फैल रहा हर ओर।
तुम क्यों बनते हो अनजान।।

रहो सुरक्षित अपने घर में।
मत जोखिम में डालो जान।।

ज्यादा अकड़ दिखाओगे तो।
पहुँच जाओगे फिर श्मशान।।

सजग नागरिक बनो देश के।
कहलाओगे तुम बहुत महान।।

संकट में मिल साथ निभाओ।
कोरोना का जड़से मिटे निशान।।

गूँज उठे फिर भारत भूमि पर।
जन गण मन की प्यारी तान।।

कोरोना का कहर

चीन देश से आया देखो, भारी भरकम इक शैतान।
नाम है इसका कोरोना, खाँसी ज्वर देता पहचान।

शीत,नमी से इसका रिश्ता, अधिक ताप में बचे ना जान।
बच्चे, बूढ़ों का ये दुश्मन, पीढ़ित ना हो, हर इंसान।

मारो इसको,मत बढ़ने दो, वरना ले सकता है ये जान।
करें सुरक्षा थोड़ी हम सब, कुचला जायेगा ये शैतान।

शाकाहार को अपनाओ तुम, मांस को अब मत दो स्थान।
योग, ध्यान, व्यायाम करो सब, आर्यावर्त की यही है पहचान।

गले मिलो ना हाथ मिलाओ, करो नमस्ते रखना ध्यान।
कम से कम ही बाहर जाओ, घर में रहकर पढ़ो पुराण।

लौंग कपूर का हवन कराओ, सुगन्ध की शक्ति बहुत महान।
निश्चित एक समय पर मिलकर, घण्टा, शंखध्वनि से छेड़ो तान।

जनता कफ़र्यू का करो समर्थन, संकट कटे,रहे निरोगी हिंदुस्तान।
ब्रम्हा,विष्णु,महेश करें सहायता, कोरोना का जड़ से मिटे निशान।

नारी

सृष्टि की अनुपम रचना नारी,
वसुन्धरा सी उपकारी नारी।
रिश्तों की बगिया महकाती,
केशर की क्यारी सी नारी।।

कठिन परिश्रम से ना हारी,
निज कर्तव्य निभाये नारी।
चूल्हे से चंदा तक पहुँचीं,
अब ना कहना तुम बेचारी।।

सुख में आगे चले ना नारी,
दुख में साथ निभाती नारी।
यम भी नतमस्तक हो जाते,
जब सावित्री बनती नारी।।

त्याग की मूरत होती नारी,
ओस की बूंदों जैसी नारी।
बात स्वाभिमान की आये,
जगदम्बा हो जाती नारी।।

निर्मल जल की धारा नारी,
सागर से भी गहरी है नारी।
मान मिले सम्मान उसे भी,
देवी जैसी पूजी जाये नारी।।

इन दिनों

क्या कहें क्या हाल है,
इन दिनों।
बहुत बड़ा जंजाल है,
इन दिनों।

फैल रहा है कोरोना,
बस यही मलाल है,
हाल बेहाल है,
इन दिनों।

दुबके दुबके बैठे हैं
सब घरों में,
महामारी से,
निपटने का ख्याल है,
इन दिनों।

दौर बुरा है गुजर जायेगा,
लौटकर सुहाना,
सफ़र आएगा,
प्रभु से यही प्रार्थना है,
इन दिनों...।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

प्रेमलता पंथी

आइडिया टावर के पास डी.डी. कालोनी बेगमगंज जिला रायसेन म.प्र.

Email- latasureshnayak@gmail.com

Mobile - 9981653828

मैं श्रीमती प्रेमालता पंथी मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के एक छोटे से शहर बेगमगंज से हूँ। मैं शा.प्रा. शिक्षक के पद पर हूँ। मुझे कविता,कहानी पढ़ने का शौक बचपन से ही था। मैंने लिखने की सुरुवात बाल कविताओं से की। व्यस्तता के कारण लिखने का ज्यादा समय नहीं मिल पाता था। लेकिन अभी आपातकालीन स्थिति में मैंने समय का पूर्ण सदुपयोग कर बहुत कुछ सृजन किया।

मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ अंतरा शब्दशक्ति मंच का इस मंच ने मेरी कलम को पहचान दी है। मुझे बहुत प्रोत्साहित किया अपनी पत्रिकाओं में मेरी रचनाओं को स्थान देकर। क्योंकि एक लेखक किसी पुरस्कार का तलबगार नहीं होता, बस वह चाहता है की उसकी रचनाएं अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचें।

सादर धन्यवाद।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

ANTRASHABDSHAKTI

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/